हकेंवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू, स्वामी दयानंद सरस्वती पीठ यूजीसी के सहयोग से आयोजन

रोजगार और विद्या व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में है मददगार : प्रो. वीरेंद्र अलंकार

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

अध्ययन के मूल उद्देश्य की पूर्ति शिक्षावान बनने से नहीं, बल्कि विद्यावान बनने में निहित है। शिक्षा का उद्देश्य महज रोजगार तक सीमित रहता है, जबकि विद्या किसी भी व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में मददगार साबित होती है, इसलिए विद्यावान बनें।

ये बातें सोमवार को हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़, में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के तौर पर पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग व दयानंद पीठ के अध्यक्ष प्रो. वीरेंद्र अलंकार ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के समक्ष कहीं। प्रो. अलंकार ने आगे कहा कि यही वो कारण है जिसकी वजह से विद्यालय, विश्वविद्यालय शब्द की उत्पत्ति हुई, अन्यथा ये शिक्षालय व विश्वशिक्षालय के नाम से पहचाने जाते। विश्वविद्यालय की स्वामी दयानन्द सरस्वती पीठ की ओर से 'स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज का शिक्षा के प्रसार में योगदान' विषय पर आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का सोमवार को हवन के साथ शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के तौर पर प्रो. वीरेंद्र अलंकार उपस्थित रहे। इस सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग में सलाहकार प्रो. अमर सिंह ने की। स्वामी दयानंद सरस्वती पीठ के प्रो. रणवीर सिंह ने बताया कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। संगोष्ठी में शिक्षा के प्रचार-प्रसार में स्वामी दयानंद सरस्वती व आर्य समाज ने महती भूमिका पर विस्तार से चर्चा होगी। उन्होंने कहा कि यह आर्य समाज के प्रयासों का ही नतीजा है कि स्त्री व शूद्रों के लिए भी शिक्षा संभव हो सकी। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता व अतिथि प्रो. वीरेंद्र अलंकार ने स्वामी दयानंद सरस्वती और शिक्षा के प्रति उनके विचारों को विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से विद्यार्थियों, शोधार्थियों व शिक्षकों के समक्ष प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र में विवि की ओर से मुख्य अतिथि का स्वागत प्रो. एजे वर्मा व प्रो. रणवीर सिंह ने किया। अध्यक्षता कर रहे प्रो. अमर सिंह ने शिक्षा के महत्व और उसमें आर्य समाज के योगदान पर प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. नवल किशोर ने और मंच संचालन शिक्षा विभाग में सहायक आचार्य डॉ. दिनेश चहल ने किया। प्रो. रणवीर सिंह ने बताया कि इस आयोजन में अगले दो दिनों में विभिन्न विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों से प्रतिभागी व विशेषज्ञ हिस्सा लेंगे। इनमें प्रो. बलबीर आचार्य, डॉ. श्रीभगवान, डॉ. सुनीता सैनी, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक; डॉ. प्रियंका, दयालबाग विश्वविद्यालय, आगरा; डॉ. सत्यप्रिय, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू; प्रो. राजेंद्र विद्यालंकार, निदेशक, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र; डॉ. रविप्रकाश आर्य, प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय, खरखौदा; डॉ. सत्यपाल सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. सरस्वती व जाकिर हुसैन महाविद्यालय, दिल्ली के नाम प्रमुख हैं।

महेंद्रगढ़. प्रो. वीरेंद्र अलंकार का स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत करते प्रो. रणवीर सिंह।

शिक्षावान नहीं, विद्यावान बनें : प्रो. अलंकार

स्वामी दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज का शिक्षा के प्रसार में योगदान विषय पर हकेंवि में राष्ट्रीय संगोष्ठी

अमर उजाला ब्यूरो

महेंद्रगढ़।

अध्ययन के मूल उद्देश्य की पूर्ति शिक्षावान बनने से नहीं बल्कि विद्यावान बनने में निहित है। शिक्षा का उद्देश्य महज रोजगार तक सीमित रहता है जबकि विद्या किसी भी व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में मददगार साबित होती है। इसलिए विद्यावान बनें।

यह बातें पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग एवं दयानंद पीठ के अध्यक्ष प्रो. वीरेंद्र अलंकार ने कहीं। वे सोमवार को हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के तौर पर पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि यही वो कारण है, जिसकी वजह से विद्यालय, विश्वविद्यालय शब्द की उत्पत्ति हुई, अन्यथा ये शिक्षालय व विश्वशिक्षालय के नाम से पहचाने जाते।

केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्वामी दयानंद सरस्वती पीठ की ओर से स्वामी दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज का शिक्षा के प्रसार में योगदान विषय पर आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का सोमवार को हवन के साथ शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के तौर पर प्रो. वीरेंद्र अलंकार उपस्थित रहे। इस सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के सलाहकार प्रो. अमर सिंह ने की। स्वामी दयानंद सरस्वती पीठ के प्रो. रणवीर सिंह ने बताया कि संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह आर्य समाज के प्रयासों का ही नतीजा है कि स्त्री व शूद्रों के लिए भी शिक्षा संभव हो सकी। उन्होंने बताया कि दो दिवसीय संगोष्ठी में शिक्षा के प्रसार में स्वामी जी और आर्य समाज के विभिन्न प्रयासों पर चर्चा होगी। संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता व अतिथि प्रो. वीरेंद्र अलंकार ने कहा कि आज डीएवी सोसायटी करीब एक करोड़ लोगों से जुड़ी हुई है और शिक्षा के प्रसार में अहम भूमिका अदा कर रही है। मुख्य अतिथि का स्वागत प्रो. एजे वर्मा व प्रो. रणवीर सिंह ने किया। सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो. अमर सिंह ने शिक्षा के महत्व और उसमें आर्य समाज के योगदान पर प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. नवल किशोर ने दिया और मंच संचालन शिक्षा विभाग में सहायक आचार्य डॉ. दिनेश चहल ने किया।

हकेंवि में दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन करते प्रो. वीरेंद्र अलंकार।

हकेंवि में बीएड और एमएड के लिए 26 तक करें आवेदन

महेंद्रगढ़ (ब्यूरो) । हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ में बीएड और एमएड पाठ्यक्रम में अध्ययन के इच्छुक विद्यार्थी 26 मार्च, 2018 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। विश्वविद्यालय में बीएड व एमएड पाठ्यक्रम में क्रमशः 100 व 50 सीटों के लिए सत्र 2018-19 की दाखिला प्रक्रिया जारी है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ के अनुसार शिक्षा पीठ में एनसीटीई के मानदंडों के अनुरूप विभिन्न प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय, डिजिटल पुस्तकालय, कम्प्यूटर लैब, वाई-फाई कैंपस के साथ-साथ अनुभवी एवं योग्य शिक्षक उपलब्ध हैं। विभाग की प्रभारी प्रो. नीरजा धनखड़ ने बताया कि एमएड पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए बीएड में 50 प्रतिशत अंक अनिवार्य हैं। इसी प्रकार बीएड पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए स्नातक स्तर की परीक्षा 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इन पाठ्यक्रमों में केंद्रीय विश्वविद्यालय संयुक्त प्रवेश परीक्षा (सीयूसीईटी) 28 व 29 अप्रैल को आयोजित की जाएगी।

शिक्षावान नहीं, विद्यावान बनें: प्रो. वीरेंद्र अलंकार

महेंद्रगढ़। अध्ययन के मूल उद्देश्य की पूर्ति शिक्षावान बनने से नहीं बल्कि विद्यावान बनने में निहित है। शिक्षा का उद्देश्य महज रोजगार तक सीमित रहता है जबकि विद्या किसी भी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में मददगार साबित होती है इसलिए विद्यावान बनें। ये बातें सोमवार को हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में सोमवार को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यूजीसी द्वारा प्रयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के तौर पर पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग व दयानंद पीठ के अध्यक्ष प्रो. वीरेंद्र अंलकार ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के समक्ष कहीं। इस अवसर पर प्रो. अलंकार ने कहा कि यहीं कारण है जिसकी वजह से विद्यालय, विश्वविद्यालय शब्द की उत्पत्ति हुई।

शिक्षावान नहीं, विद्यावान बनें: प्रो. वीरेंद्र अलंकार

महेंद्रगढ़। अध्ययन के मूल उद्देश्य की पूर्ति शिक्षावान बनने से नहीं बल्कि विद्यावान बनने में निहित है। शिक्षा का उद्देश्य महज रोजगार तक सीमित रहता है जबकि विद्या किसी भी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में मददगार साबित होती है इसलिए विद्यावान बनें। ये बातें सोमवार को हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में सोमवार को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यूजीसी द्वारा प्रयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के तौर पर पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग व दयानंद पीठ के अध्यक्ष प्रो. वीरेंद्र अंलकार ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के समक्ष कहीं। इस अवसर पर प्रो. अलंकार ने कहा कि यहीं कारण है जिसकी वजह से विद्यालय, विश्वविद्यालय शब्द की उत्पत्ति हुई।